I

Lecture series No. - 57.

Online Class.
Date - 29/5/2020
Time - 10:50 to 11:40 A.M

Topic,

(1) Epistemology.

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy
B.A Part - II
Paper - III (H.)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

Ans.- प्रमाणशास्त्र (Epistemology) में हमने आरंभ में ही देखा है कि न्याय के अनुसार ज्ञान के साधन चार हैं। जिसमें प्रत्यक्ष भी एक है। प्रत्यक्ष पर विचार करने के पूर्व संक्षेप में ज्ञान के स्वरूप पर विचार करना प्रत्यक्ष की एक है।

प्रत्यक्ष पर विचार करने के पूर्व संक्षेप में ज्ञान के स्वरूप पर विचार करना अपेक्षित होगा।

इसे न्याय के प्रमाण शास्त्र Epistemology में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। न्याय दर्शन में ज्ञान के

P.T.O.

बुद्धि (Cognition) उपलब्धि (Apprehension) का प्रयोग माना गया है।

वस्तुतः ज्ञान बुद्धि और उपलब्धि के अर्थ में प्रयुक्त किये जाते हैं।

ज्ञान का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है व्यापक अर्थ में और संकुचित अर्थ में व्यापक अर्थ में वह यथार्थ और अयथार्थ ज्ञान का सूचक है इसे उदाहरण से समझा जा सकता है :- रात्रि के समय एक व्यक्ति रस्सी को देखकर रस्सी समझता है और दूसरा रस्सी को देखकर साँप समझता है। यद्यपि यहाँ ज्ञान दोनों को ही रहा है फिर भी दोनों के ज्ञान में इसलिए अन्तर है कि एक को यथार्थ ज्ञान हो रहा है तथा दूसरे को इस प्रकार व्यापक

P.T.O.

Scanned with CamScanner

अर्थ में ज्ञान शब्द का प्रयोग यथार्थ और अयथार्थ ज्ञान के रूप में होता है परन्तु इसके विपरीत संकुचित अर्थ मे ज्ञान, यथार्थ ज्ञान का ही एकमात्र बोधक होता है।

न्याय - दर्शन में 'ज्ञान' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में ही हुआ है।

न्याय - दर्शन में ज्ञान का स्वरूप ज्ञान का स्वरूप प्रकाशमय माना गया है।

ज्ञान का स्वरूप है / किसी वस्तु को ~~प्रकाशी~~ प्रकाशित करना करना। जिस प्रकार दीपक समीपस्थ वस्तु को प्रकाशित करता है उसी प्रकार ज्ञान भी वस्तु को प्रकाशित करता है। तर्क कौमुदी में कहा गया है "अर्थ प्रकाशो बुद्धिः" वस्तु के प्रकाश मे ही ज्ञान निहित है। यहां पर यह कहना स-(

E.N.D